महामानव बुद्ध की महान विद्या

विपश्यना का उद्गम और विकास

विपश्यनाचार्य सत्यनारायण गोयन्का

महामानव बुद्ध की महान विद्या

विपश्यना का उद्‌गम और विकास

विपश्यनाचार्य सत्यनारायण गोयन्का

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

H55 - महामानव बुद्ध की महान विद्या
विपश्यना का उद्गम और विकास

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकर सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०१०

संस्करण : २०११, २०१३, मई २०१८

ISBN: 978-81-7414-315-0

प्रकाशकः
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२ ४०३
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोनः ०२५५३-२४४९९८, २४४०७६,
२४४०८६, २४४१४४, २४४४४०
Email: vri_admin@vridhamma.org
Website : www.vridhamma.org

मुद्रकः
अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
जी-२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.,
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

विषयः सूची

१. तापस सुमेध १
२. गर्भाधान स्वप्न २
३. जन्म ३
४. ऋषि कालदेवल ४
५. बालक सिद्धार्थ का प्रथम ध्यान ५
६. हिंसक देवदत्त ६
७. अतुलनीय तीरंदाज ७
८. पराक्रमी योद्धा और अद्‌भुत घुड़सवार ८
९. कोलियराज सुप्पबुद्ध की पुत्री
का विवाह-मंगल ९
१०. चार निमित्तों में से पहला निमित्त १०
११. दूसरा निमित्त ११
१२. तीसरा निमित्त १२
१३. चौथा निमित्त १३
१४. गृह-त्याग १४
१५. श्रमणवेश धारण किया १५
१६. मगध की यात्रा १६
१७. आचार्य आलार कालाम १७
१८. उद्दक रामपुत्त १८
१९. दुष्करचर्या १९
२०. दुष्करचर्या का त्याग २०
पांच स्वप्न
२१. पहला स्वप्न २१
२२. दूसरा स्वप्न २२
२३. तीसरा स्वप्न २३
२४. चौथा स्वप्न २४
२५. पांचवां स्वप्न २५
२६. सुजाता की खीर २६
२७. मार पराजित २७
२८. सम्यक संबोधि २८

२९. मार कन्याओं का दुष्प्रयत्न विफल २९
३०. तपुस्स और भल्लिक ३०
३१. कृतज्ञ संबुद्ध (उपक) ३१
३२. धर्मचक्रप्रवर्तन ३२
३३. यश और उसका पिता ३३
३४. पिता के घर भोजन ३४
३५. जाओ धर्मदूतो, धर्मप्रचारण
के लिए विचरण करो ३५
३६. उरुवेल की कुटिया में क्रुद्ध नागराज ३६
३७. मिथ्या अरहंत ३७
३८. सही अरहंत हुए ३८
३९. मगध में पुनरागमन ३९
४०. सारिपुत्त और मोग्गल्लान ४०
४१. भरपूर निंदा ४१
४२. निंदा-प्रशंसा ४२
४३. कपिलवस्तु आगमन ४३
४४. यशोधरा ४४
४५. राहुल ४५
४६. राहुल की प्रव्रज्या ४६
४७. सात प्रव्रजित ४७
४८. अनाथपिंडिक ४८
४९. उत्तम ब्राह्मण सुनीत ४९
५०. सोपाक ५०
५१. दासी खुज्जुत्तरा ५१
५२. शाक्य और कोलीय ५२
५३. भिक्षुणीसंघ की स्थापना ५३
५४. सच्चक ५४
५५. रूपगर्विता खेमा ५५
५६. चमत्कार पर रोक ५६
५७. भिक्षुणी सिसूपचाला ५७
५८. चिंचा माणविका ५८
५९. सुंदरी परिव्राजिका ५९
६०. आदर्श दंपत्ति ६०

६१. बोधिराजकुमार ६१
६२. ब्राह्मण मागण्डिय ६२
६३. गालियों की बौछार ६३
६४. नदी स्नान से पाप नहीं धुलते ६४
६५. भगवान का एकांतवास ६५
६६. कसि भारद्वाज ६६
६७. वेरंजा ६७
६८. पटाचारा ६८
६९. किसा गोतमी ६९
७०. सही यज्ञ ७०
७१. सोणदंड : ब्राह्मण बनाने वाले धर्म ७१
७२. महासाल ब्राह्मण ७२
७३. आलवक ७३
७४. सदा सुखी तथागत ७४
७५. दो हंडियां ७५
७६. अंगुलिमाल ७६
७७. सुंदरिक भारद्वाज ७७
७८. धर्मदूत पूर्ण ७८
७९. गंधारनरेश पुक्कुसाति ७९
८०. अक्कोस भारद्वाज ८०
८१. भगवान की सही वंदना ८१
८२. अछूत कन्या प्रकृति ८२
८३. प्रकृति द्वारा विवाह का प्रस्ताव ८३
८४. स्थितप्रज्ञ अरहंत की अद्‌भुत सहिष्णुता ८४
८५. वीतक्रोध ८५
८६. ब्रह्मायु धन्य हुआ! ८६
८७. संन्यासी दारुचीरियः देखने
में केवल देखना ८७
८८. रोगी की सेवा ८८
८९. मुक्त हुआ बंदी ८९
९०. धम्मदिन्ना ९०
९१. मिगारमाता विशाखा ९१
९२. सुजाता सुधरी ९२

९३. आनंदबोधि ९३
९४. वृषल कौन? ९४
९५. सत्पुरुष बिंबिसार ९५
९६. बुद्ध की हत्या का षड्यंत्र ९६
९७. नालागिरि ९७
९८. मैं स्वयं हत्या करूंगा ९८
९९. भयभीत अजातशत्रु ९९
१००. सहिष्णुता और समता १००
१०१. धर्म-समन्वित भगवान के पैर चूमे १०१
१०२. विनाशक जातिवाद १०२
१०३. लिच्छवियों को गणराज्य की सुरक्षा का उपदेश १०३
१०४. अंबपाली एवं लिच्छवी राजकुमार १०४
१०५. मातृसेवा १०५
१०६. भगवान बुद्ध का सही पूजन १०६
१०७. बुद्ध की सही वंदना १०७
१०८. सुभद्र की प्रव्रज्या १०८
१०९. तथागत का पार्थिव शरीर १०९
११०. पहला व दूसरा संगायन ११०
१११. हृदय जीतने वाला सम्राट १११
११२. तीसरा संगायन, सोण और उत्तर ११२
११३. भिक्षु महेंद्र ११३
११४. भिक्षुणी संघमित्रा ११४
११५. चौथा संगायन ११५
११६. दूषित हुए सद्धर्म का सुधार ११६
११७. पांचवां संगायन ११७
११८. अरहंत भिक्षु लैडी सयाडो ११८
११९. छठां संगायन ११९
१२०. गृहस्थ संत सयातै जी १२०
१२१. सयाजी ऊ बा खिन १२१
१२२. सयाजी ऊ गोयन्का एवं माताजी १२२

विपश्यना साधना केंद्र १२३

प्राक्कथन

यह पुस्तक विपश्यना और उसकी खोज करने वाले महामानव बुद्ध के ऐतिहासिक जीवन की रूपरेखा मात्र है। **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** की चित्र-प्रदर्शनी (आर्ट गैलरी) में सुशोभित सजीव चित्रों तथा अधिक विवरण के साथ छपी पुस्तक **'बुद्धजीवन चित्रावली'** में इससे अधिक जानकारी मिलेगी, फिर भी रूपरेखा ही है। परंतु इनसे विपश्यना का व्यावहारिक अभ्यास करने की प्रेरणा अवश्य मिलेगी। बुद्ध के जीवनकाल में और भी कितनी ही महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटीं, कितने महत्त्वपूर्ण लोग उनसे मिले; कितने ही भिक्षु-भिक्षुणियां और गृहस्थ नर-नारी उनकी दी हुई विपश्यना विद्या से स्वयं लाभान्वित होकर अनेकों के कल्याण में सहायक हुए, इन सब का विवरण बहुत विशद है। उनके वर्तमान और पूर्व जन्मों की घटनाओं का पूरा चित्रण किया जाय तो किसी भी दूरदर्शन द्वारा १,००० से अधिक धारावाहिक बन सकते हैं।

पुस्तक-प्रकाशन का उद्देश्य महामानव भगवान बुद्ध की खोजी हुई महान विद्या विपश्यना के उद्‌गम और विकास का संक्षिप्त परिचय देना है।

बुद्ध और बुद्ध की शिक्षा के बारे में अपने देश में बहुत-सी भ्रांतियां फैली हैं। ऐसी मान्यता चल पड़ी कि उन्हें ईश्वर का अवतार होने के कारण भगवान कहा गया। जबकि सच्चाई यह है कि विपश्यना विद्या की खोज करके उन्होंने अपने भीतर के राग, द्वेष और मोह जैसे विकारों का उन्मूलन कर लिया। उनकी जड़ें समाप्त कर लीं। उन्हें भग्न कर लिया। इस माने में वे भगवान कहलाये।

उनकी शिक्षा को **'बौद्धधर्म'** कहा जाने लगा और उनके अनुयायियों को **'बौद्ध'**। वस्तुतः उन्होंने **'धर्म'** की शिक्षा दी। लोगों को धम्मिको, धम्मिं, धम्मी, धम्मचारी, धम्मविहारी आदि कहा, न कि बौद्ध! बौद्ध

और बौद्धधर्म का प्रयोग एक संप्रदाय का द्योतक है। भगवान बुद्ध ने कोई संप्रदाय स्थापित नहीं किया। वस्तुतः वे संप्रदायवाद के विरोधी थे। हम नहीं जानते कि कब से उनकी शिक्षा को और उनके अनुयायियों को 'बौद्ध' कहा जाने लगा। आठवीं सदी तक 'बौद्ध' शब्द किसी ग्रंथ में नहीं मिलता। पालि भाषा में तो 'बौद्ध' शब्द है ही नहीं।

भगवान के बारे में और भी कई प्रकार की भ्रांतियां हैं जिनका निराकरण और तथ्यों का उद्‌घाटन होना आवश्यक है। साधक के लिए तो अत्यंत आवश्यक है। अन्यथा वह भ्रांतियों में ही उलझा रह जायगा। वास्तविकता को जान ही नहीं पायगा। प्रस्तुत पुस्तक से, सब नहीं तब भी कुछ भ्रांतियों से छुटकारा अवश्य मिलेगा।

आओ समझें, सिद्धार्थ गौतम ने ऐसी क्या खोज की जिससे कि वे सम्यक संबुद्ध बने। उन्होंने आठ ध्यान तो कर ही लिए थे। लेकिन उनसे मुक्त अवस्था नहीं प्राप्त हुई।

आठों ध्यान तो लोकीय क्षेत्र के ही हैं। देवलोक और रूप तथा अरूप ब्रह्मलोक लोकीय क्षेत्र ही है। आठ ध्यान करने वाले को यह स्पष्ट हो जाता है कि यह सारा क्षेत्र अनित्य है, नश्वर है, भंगुर है। क्योंकि यहां प्रतिक्षण तरंगों का उदय-व्यय होता है। इसलिए इस अवस्था तक पहुँचा हुआ व्यक्ति भवसंसरण से मुक्त हुआ नहीं माना जा सकता। जिसे इन आठ ध्यानों के लोकीय क्षेत्र के परे नित्य, शाश्वत, ध्रुव की सच्चाई का साक्षात्कार होता है वही मुक्त अवस्था तक पहुँचता है। इसके लिए जिस विधि को उन्होंने खोजा उसे विपश्यना कहते हैं। इस विधि को जो व्यक्ति किसी अन्य के आदेशों और उपदेशों से प्राप्त करता है वह संबुद्ध नहीं कहलाता। संबुद्ध तो वह जो ऐसे समय में जन्म ले, जबकि सारे विश्व में विपश्यना सर्वथा लुप्त हो चुकी हो और वह उसे अपने प्रयत्नों द्वारा स्वयं खोज निकाले तो ही 'संबुद्ध' यानी 'स्वयं बुद्ध' कहलाता है।

अनेक कल्पों पूर्व जब भगवान दीपंकर सम्यक संबुद्ध हुए तब सुमेध नामक एक श्रद्धालु तपस्वी ब्राह्मण ने उनको गांव की ओर आते हुए देखा। मार्ग में कुछ कीचड़ था। उस पर चलते हुए भगवान के पैर मैले न हो जायँ, इसलिए वह कीचड़ पर औंधेमुँह लेट गया ताकि भगवान उसकी पीठ पर पैर रख कर चलें। भगवान ने उसे देखा और उसकी मनोकामना जाननी चाही। उन्होंने देखा कि यह व्यक्ति पारमी संपन्न है। यदि इसे अभी विपश्यना दे दी जाय तो अरहंत अवस्था प्राप्त कर लेगा क्योंकि यह आठों ध्यानों में भी संपन्न है।

लेकिन फिर देखा कि यह व्यक्ति सामान्य रूप से अरहंत नहीं बनना चाहता। यह तो मेरी तरह सम्यक संबुद्ध बनना चाहता है, जिसके लिए दसों पारमिताएं बहुत अधिक मात्रा में पूरी करनी होती हैं। इसमें बहुत समय भी लगता है। इस व्यक्ति के दृढ़ संकल्प को देख कर उन्होंने जाना कि यह व्यक्ति सम्यक संबुद्ध बनने के लिए पर्याप्त मात्रा में दसों पारमिताओं को पूरी कर लेगा। तब उन्होंने यह भविष्यवाणी की कि तुम अनेक कल्पों के बाद सिद्धार्थ गौतम के नाम से जन्मोगे और तपस्या करके सम्यक संबुद्ध बनोगे।

कोई व्यक्ति सम्यक संबुद्ध तभी बनता है जब कि सारे विश्व में कहीं भी विपश्यना विद्या का नामोनिशान नहीं रहता और इसी की खोज कर लेने के कारण यह व्यक्ति सम्यक संबुद्ध होता है।

एक बात ध्यान देने की यह है कि इस विद्या के प्राप्त होने पर तपस्वी सिद्धार्थ गौतम ने कहा-- **पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादी'ति।** पहले कभी सुना ही नहीं ऐसा धर्म जागा आदि.....। उन दिनों भी कुछ लोग शील पालन करते ही थे। भिन्न-भिन्न आलंबनों से समाधि का अभ्यास करते ही थे। परंतु वह सम्यक समाधि नहीं थी। तपस्वी सिद्धार्थ ने सम्यक समाधि का अभ्यास किया। सम्यक इस माने में कि जो समाधि प्रज्ञा की ओर ले जाय।

प्रज्ञा भी स्रुतमयी और चिंतनमयी नहीं। इनसे केवल वाणीविलास और बुद्धिविलास होता है। केवल ऐसी ही प्रज्ञा को सुन कर और

चिंतन करके कोई व्यक्ति वास्तविक प्रज्ञा का अनुभव नहीं करता। प्रज्ञा में स्थित हुआ नहीं कहलाता। ऐसा व्यक्ति वस्तुतः प्रज्ञा में स्थित नहीं होता। वह भवसंसरण से मुक्त नहीं हो सकता। ऐसा व्यक्ति हत्याएं भी करता है और झूठ, छल-कपट भी। इनके परिणामस्वरूप नरकगामी होता है। भवमुक्ति के लिए अनुभूतिजन्य भावनामयी प्रज्ञा का अभ्यास करना होता है। वह भावनामयी प्रज्ञा जो आगे जाकर पटिवेधन प्रज्ञा बन जाती है, जो कि विकारों की जड़ों को बींध-बींध कर, उनका उन्मूलन कर देती है। शील और सम्यक समाधि तथा भावनामयी पटिवेधन प्रज्ञा की खोज से ही विपश्यना का उद्‌गम हुआ। इसके अभ्यास द्वारा तपस्वी सिद्धार्थ भवसंसरण से मुक्त हुआ और स्वयं इसकी खोज करने के कारण सम्यक संबुद्ध कहलाया। यही विपश्यना का उद्‌गम हुआ जोकि उस समय के विश्व में सर्वथा लुप्त थी।

बुद्ध ने जो खोज किया, वही लोगों को सिखाया। शील पालन करते हुए सम्यक समाधि और अनुभवजन्य प्रज्ञा सिखायी। यही विपश्यना है जिससे उनके जीवनकाल में अनेक लोगों ने लाभ उठाया।

उसके बाद भारत में अशोक के समय तक यह खूब फैली लेकिन दुर्भाग्य से अशोक के १०० वर्ष के बाद इसका ह्रास होने लगा। शनैः शनैः भारत से यह विद्या बिल्कुल लुप्त हो गयी। विपश्यना नाम तक लुप्त हो गया। पड़ोसी देशों में गयी, वहां भी कोई-न-कोई छोटी या बड़ी विकृति आ गयी। लेकिन बर्मा एक ऐसा देश था जहां अशोक ने सोण और उत्तर को भेज कर भगवान की वाणी के साथ-साथ यह विपश्यना विद्या भी पहुँचायी। २२०० वर्ष पहले जो विद्या दक्षिण बर्मा में पहुँची, जिसे उन दिनों स्वर्णभूमि कहते थे, उसे वहां के भिक्षुओं ने संभाल कर जीवित रखा। गुरु-शिष्य परंपरा द्वारा यह शुद्ध रूप में २२०० वर्ष तक कायम रही। लगभग १०० वर्ष पहले यह विद्या वहां के प्रबुद्ध भिक्षु लैडी सयाडो को प्राप्त हुई। उन्होंने बुद्धवाणी के साथ उसे मिला कर स्पष्ट रूप से लोगों को समझाया और सिखाया। उन्होंने देखा कि बुद्ध के प्रथम शासन के समापन पर यानी २५००

वर्ष पूरे होने पर यह विद्या बाहर जायगी और भारत तथा सारे विश्व में फैलेगी। जब इसे विश्व में फैलना है तब यह केवल भिक्षुओं तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। इसलिए उन्होंने आवश्यक समझा कि गृहस्थों को भी विपश्यना की विद्या सिखायी जाय। भगवान बुद्ध के समय भिक्षु और भिक्षुणी ही नहीं, गृहस्थ पुरुष और नारी भी विपश्यना का अभ्यास करते थे और उनमें से कई विपश्यनाचार्य थे जो औरों को विपश्यना सिखाते थे। लेकिन समय बीतते-बीतते यह गृहस्थ की विपश्यनाचार्य की परंपरा लुप्त हो गयी। गृहस्थों को विपश्यना नहीं सिखायी जाती थी लेकिन इन्होंने उनको सिखाने का काम पुनः आरंभ किया और सयातैजी को तथा उसके बाद सयाजी ऊ बा खिन को विपश्यनाचार्य बनाया। इसके कारण विपश्यना विद्या बाहर आयी और भारत तथा विश्व में फैलने लगी।